सुवर्णमाला स्तुतिः

सुवर्णमाला स्तुतिः

अथ कथमपि मद्रासनां त्वद्गुणलेशैर्विशोधयामि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 1 ||

आखंडलमदखंडनपंडित तंडुप्रिय चंडीश विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 2 ||

इभचर्मांबर शंबररिपुवपुरपहरणोज्ज्वलनयन विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 3 ||

ईश गिरीश नरेश परेश महेश बिलेशयभूषण भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 4 ||

उमया दिव्यसुमंगळविग्रहयालिंगितवामांग विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 5 ||

ऊरीकुरु मामज्ञमनाथं दूरीकुरु मे दुरितं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 6 ||

ऋषिवरमानसहंस चराचरजननस्थितिलयकारण भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 7 ||

ॠक्षाधीशकिरीट महोक्षारूढ विधृतरुद्राक्ष विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 8 ||

लुवर्णद्रुंद्रुमवृंतसुकुसुममिवांघ्रौ तवार्पयामि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 9 ||

एकं सदिति श्रुत्या त्वमेव सदसीत्युपास्महे मृड भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 10 ||

ऐक्यं निजभक्तेभ्यो वितरसि विश्वंभरोऽत्र साक्षी भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 11 ||

ओमिति तव निर्देष्ट्री मायास्माकं मृडोपकर्त्री भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 12 ||

औदास्यं स्फुटयति विषयेषु दिगंबरता च तवैव विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 13 ||

अंतःकरणविशुद्धिं भक्तिं च त्वयि सतीं प्रदेहि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 14 ||

अस्तोपाधिसमस्तव्यस्तै रूपैर्जगन्मयोऽसि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 15 ||

करुणावरुणालय मयि दास उदासस्तवोचितो न हि भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 16 ||

खलसहवासं विघटय घटय सतामेव संगमनिशं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 17 ||

गरळं जगदुपकृतये गिलितं भवता समोऽस्ति कोऽत्र विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 18 ||

घनसारगौरगात्र प्रचुरजटाजूटबद्धगंग विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 19 ||

ज्ञप्तिः सर्वशरीरेष्वखंडिता या विभाति सा त्वं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 20 ||

चपलं मम हृदयकपिं विषयद्रुचरं दृढं बधान विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 21 ||

छाया स्थाणोरपि तव तापं नमतां हरत्यहो शिव भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 22 ||

जय कैलासनिवास प्रमथगणाधीश भूसुरार्चित भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 23 ||

झणुतकझंकिणुझणुतत्किटतक-शब्दैर्नटसि महानट भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 24 ||

ज्ञानं विक्षेपावृतिरहितं कुरु मे गुरुस्त्वमेव विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 25 ||

टंकारस्तव धनुषो दलयति हृदयं द्विषामशनिरिव भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 26 ||

ठाकृतिरिव तव माया बहिरंतः शून्यरूपिणी खलु भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 27 ||

डंबरमंबुरुहामपि दलयत्यनघं त्वदंघ्रियुगळं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 28 ||

ढक्काक्षसूत्रशूलद्रुहिणकरोटीसमुल्लसत्कर भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 29 ||

णाकारगर्भिणी चेच्छुभदा ते शरगतिर्नृणामिह भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 30 ||

तव मन्वतिसंजपतः सद्यस्तरति नरो हि भवाब्धिं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 31 ||

थूत्कारस्तस्य मुखे भूयात्ते नाम नास्ति यस्य विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 32 ||

दयनीयश्च दयाळुः कोऽस्ति मदन्यस्त्वदन्य इह वद भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 33 ||

धर्मस्थापनदक्ष त्र्यक्ष गुरो दक्षयज्ञशिक्षक भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 34 ||

ननु ताडितोऽसि धनुषा लुब्धधिया त्वं पुरा नरेण विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 35 ||

परिमातुं तव मूर्तिं नालमजस्तत्परात्परोऽसि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 36 ||

फलमिह नृतया जनुषस्त्वत्पदसेवा सनातनेश विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 37 ||

बलमारोग्यं चायुस्त्वद्गुणरुचितां चिरं प्रदेहि विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 38 ||

भगवन्भर्ग भयापह भूतपते भूतिभूषितांग विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 39 ||

महिमा तव न हि माति श्रुतिषु हिमानीधरात्मजाधव भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 40 ||

यमनियमादिभिरंगैर्यमिनो हृदये भजंति स त्वं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 41 ||

रज्जावहिरिव शुक्तौ रजतमिव त्वयि जगंति भांति विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 42 ||

लब्ध्वा भवत्प्रसादाच्चक्रं विधुरवति लोकमखिलं भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 43 ||

वसुधातद्धरतच्छयरथमौर्वीशर पराकृतासुर भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 44 ||

शर्व देव सर्वोत्तम सर्वद दुर्वृत्तगर्वहरण विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 45 ||

षड्रिपुषड्भूर्मिषड्विकारहर सन्मुख षण्मुखजनक विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 46 ||

सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेत्येतल्लक्षणलक्षित भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 47 ||

हाहाहूहूमुखसुरगायकगीतापदानपद्य विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 48 ||

ळादिर्न हि प्रयोगस्तदंतमिह मंगळं सदास्तु विभो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 49 ||

क्षणमिव दिवसान्नेष्यति त्वत्पदसेवाक्षणोत्सुकः शिव भो |
सांब सदाशिव शंभो शंकर शरणं मे तव चरणयुगं || 50 ||

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ सुवर्णमाला स्तुतिः संपूर्णा ||